2

बुद्धि बड़ी या पैसा?

पाठ से पूर्व

- धन और बुद्धि में से क्या महत्वपूर्ण है?
- क्या बुद्धि के लिए धन का उचित उपयोग किया जा सकता है?
- क्या धन कमाने के लिए हमें ठगी का सहारा लेना चाहिए?

पाठ का परिचय

प्रस्तुत पाठ के माध्यम से यह बताया गया है कि जिसके पास धन है, वह स्वयं को पूर्णत समर्थ समझता है, परंतु सच्चाई यह है कि बुद्धि के बिना रुपया-पैसा सब व्यर्थ बुद्धिमान व्यक्ति सब कुछ संभव कर सकता है।

किसी देश में एक **संपन्न** और **अहंकारी** राजा शासन करता था। वह पैसे को ही सब मानता था।

राजा सिर से पैर तक पैसे के **मद** में डूबा हुआ था, परंतु उसकी रानी बहुत **बुद्धिम** थी। वह बुद्धि को धन से श्रेष्ठ समझती थी। रानी की बुद्धिमानी के कारण ही राजा काम-काज उचित ढंग से चलता था। उसका कहना था कि दुनिया धन के बल पर बल्कि बुद्धि के बल पर चलती है।

एक दिन राजा ने रानी से पूछा, "रानी, सच कहो, दुनिया में बुद्धि बड़ी है या पैसा?"

Scanned by TapScanner

राजा के मन में छिपे पैसे के मोह को रानी जानती थी। वह बोली, "महाराज, यदि आप सच जानना चाहते हैं, तो मैं बुद्धि को बड़ा समझती हूँ। बुद्धि से ही सारे कार्य संभव होते हैं। बुद्धि न हो तो सब खज़ाने यों ही लुट जाते हैं। राजपाट **चौपट हो** जाते हैं।"

धन की **निंदा** सुनकर राजा बहुत क्रोधित हुआ। उसने कहा, "रानी! तुम्हें अपनी बुद्धि का बड़ा घमंड है। मैं देखना चाहता हूँ कि बिना धन के तुम बुद्धि से कैसे काम करती हो।" ऐसा कहकर उसने रानी को दो-चार नौकरों के साथ नगर के बाहर एक दूसरे मकान में भेज दिया। खर्च के लिए न तो धन दिया और न कोई सामान। रानी के **ज़ेवर** भी उतरवा लिए। रानी ने मन-ही-मन तय कर लिया कि एक दिन वह **सिद्ध** कर देगी कि संसार में बुद्धि ही सब कुछ है, पैसा कुछ भी नहीं।"

नए मकान में पहुँचकर रानी ने नौकर द्वारा दो ईंटें मँगवाईं। ईंटों को सफ़ेद कपड़े में लपेटकर ऊपर से अपने नाम की मुहर लगाई और नौकर से कहा, "तुम मेरी इस **धरोहर** को धन्नू सेठ के घर ले जाओ। उससे कहना कि रानी ने यह धरोहर भेजी है और दस हज़ार रुपए मँगवाए हैं। कुछ दिनों में रुपए **सूद** के साथ लौटा दिए जाएँगे और धरोहर वापस ले ली जाएगी।"

इन्हें भी जानें

संपन्न–धनी, अमीर
अहंकारी–घमंडी
मद–नशा
बुद्धिमती–वह स्त्री जो बुद्धिमान हो
चौपट होना–बरबाद होना
निंदा–बुराई
ज़ेवर–गहने
सिद्ध–साबित
धरोहर–अमानत
सूद–ब्याज, मूल धन के अतिरिक्त दिया जाने वाला धन

नोट: विद्यार्थी पाठ द्वारा सीखे नवीन शब्दों तथा मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग करें।

Scanned by TapScanner

नौकर सेठ के घर पहुँचा। धरोहर पर रानी के नाम की मुहर देखकर सेठ ने समझा कि इसमें कीमती जेवर होंगे। उसने दस हज़ार रुपए चुपचाप दे दिए। रुपए लेकर नौकर रानी के पास आया। रानी ने इन रुपयों से व्यापार शुरू किया। देखते-ही-देखते थोड़े ही दिनों में उसने इतना धन कमा लिया कि सेठ के रुपए चुकाने के बाद भी काफ़ी रुपए बच गए। उन रुपयों से रानी ने गरीबों के लिए मुफ़्त दवाखाना, **पाठशाला** तथा **अनाथालय** खुलवाए। रानी का यश चारों ओर फैलने लगा।

रानी के चले जाने के बाद राजा अकेला रह गया। रानी राजा को उचित सलाह देती थी। उसके सामने की **दाल नहीं गल पाती** थी। अब धूर्त लोग आ-आकर राजा को लूटने लगे। राजा अपना राजकाज मंत्रियों सौंपकर देश-भ्रमण के लिए निकल पड़ा।

नगर के बाहर निकलते ही राजा को कुछ ठग मिले। उनमें से काना आदमी राजा के पास आकर बो "महाराज, मैंने अपनी एक आँख आपके पास दो हज़ार रुपए में गिरवी रखी थी। अब आप अपने रुपए ले मेरी आँख मुझे वापस कीजिए।"

राजा ने कहा, "भाई, मेरे पास किसी की आँख नहीं है। तुम मंत्री के पास जाकर पूछो।"

ठग बोला, "महाराज, मैं मंत्री को नहीं जानता? मैंने तो आँख आपके पास गिरवी रखी थी, आप ही मेरी आँख को

राजा बड़ा परेशान हुआ। अपनी **इज़्ज़त** बचाने के लिए उसने जैसे-तैसे चार हज़ार रुपए देकर उसे विदा कि राजा जैसे ही आगे चला तभी एक बूढ़ा आदमी उसके सामने आकर कहने लगा, "महाराज, मैंने अपना कान आपके पास गिरवी रखा था। रुपए लेकर मेरा कान मुझे वापस कीजिए।" राजा ने उसे भी रुपए विदा किया। इस प्रकार मार्ग में कई ठग आए और राजा से रुपए ऐंठे। राजा के पास जो धन था, वह ने लूट लिया। वे खाली हाथ राजकुमारी चौबोला के देश पहुँचे।

राजकुमारी चौबोला सिंह देश की राजकन्या थी। वह बहुत सुंदर थी। उसकी यह शर्त थी कि जो आदमी शतरंज में हरा देगा, वह उसी के साथ विवाह करेगी। दूर-दूर से कई राजकुमार उसके साथ शतरंज खेलने और हारकर जेल में पड़े थे। पीड़ित राजा भी उसी देश में आ पहुँचे। जब राजकुमारी चौबोला की सुंदरता बारे में उन्होंने सुना, तो उनकी इच्छा भी उसके साथ विवाह करने की हुई। राजकुमारी ने महल से कुछ एक बंगला बनवा दिया था। विवाह की इच्छा से आने वाले लोग इसी बंगले में ठहरते थे। राजा भी उसी ब में जा पहुँचा। पहरेदार ने तुरंत सूचना राजकुमारी को दी। कुछ देर बाद उड़ता हुआ एक तोता आया

Scanned by TapScanner

राजा की बाँह पर बैठ गया। उसके गले में एक चिट्ठी बँधी थी, जिसमें विवाह की शर्तें लिखी थीं। चिट्ठी के अंत में यह भी लिखा था कि यदि तुम शतरंज में हार गए, तो तुम्हें **जेल की हवा खानी** पड़ेगी।

थोड़ी देर बाद राजा को राजकुमारी चौबोला के महल में बुलाया गया। खेल शुरू हुआ और राजा हार गया। शर्त के अनुसार वह जेल भेज दिया गया।

राज्य की दशा बिगड़ने और राजा के नगर छोड़कर चले जाने की सूचना जब रानी को मिली, तो उसे बहुत दुख हुआ। वह राजा की खोज में निकल पड़ी। कुछ ही दूर चली थी कि वही ठग फिर आ गए। सबसे पहले वही काना आया और कहने लगा, "रानी साहिबा, मैंने आपके पास अपनी आँख दो हज़ार रुपए में गिरवी रखी थी। आप अपने रुपए लेकर मेरी आँख वापस दीजिए।"

रानी बोली, "अच्छी बात है, मेरे पास बहुत-से लोगों की आँखें गिरवी हैं, उन्हीं में तुम्हारी भी होगी। ऐसा करो कि तुम अपनी दूसरी आँख निकालकर मुझे दो। उसके तौल की जो आँख होगी, वह तुम्हें दे दी जाएगी।"

रानी की बात सुनकर ठग बहुत घबराया। वह हाथ-पैर जोड़कर माफ़ी माँगने लगा। ठग ने रानी से **विनती** की और अंत में चार हज़ार रुपए देकर अपनी जान बचाई। ऐसी ही दशा कान वाले ठग की हुई। जब उसने देखा कि रानी का नौकर उसका दूसरा कान काटने ही वाला है, तो उसने भी चार हज़ार रुपए देकर रानी से अपना पीछा छुड़ाया।

रानी और आगे बढ़ी। राजा को ढूँढ़ते-ढूँढ़ते राजकुमारी चौबोला के देश में जा पहुँची। राजा के जेल जाने की खबर सुनकर वह बहुत दुखी हुई। अब वह राजा को आज़ाद करने का उपाय सोचने लगी। उसने पता लगाया कि राजकुमारी चौबोला किस प्रकार शतरंज खेलती है। सारा **भेद** समझकर उसने पुरुष का **वेश** धारण किया और राजकुमारी चौबोला के महल में पहुँची। राजकुमारी चौबोला रानी से शतरंज हार गई। राजकुमारी के विवाह की तैयारियाँ होने लगीं। रानी बोली, "विवाह तो शर्त पूरी होते ही हो गया, रही भाँवरें पड़ने की परंपरा, तो वह घर चलकर पूरी हो जाएगी। वहीं पर धूम-धाम से शादी की जाएगी।"

राजकुमारी का विवाह निश्चित होते ही सारे कैदी मुक्त कर दिए गए। दूसरे दिन सवेरे रानी राजकुमारी चौबोला को विदा कराकर हाथी-घोड़े, दास-दासी और बहुत सारे धन के साथ अपने नगर को चली। कुछ दिन में वह अपने नगर में आ पहुँची और नगर के बाहर अपने मकान में ठहर गई। राजा जब लौटकर अपने नगर में आया, तो रानी के मकान के पास औषधालय, पाठशाला, अनाथालय आदि कई इमारतें देखकर राजा आश्चर्य चकित हो गया। वह सोचने लगा, रानी को मैंने तो एक पैसा नहीं दिया था, उसके पास इतना धन कहाँ से आया; उसने ये लाखों की इमारतें कैसे बनवा लीं? राजा को रानी की **बुद्धिमत्ता** पर **यकीन** हो गया।

राजा काफ़ी लज्जित हुआ, फिर कुछ देर सोचकर रानी से कहने लगा, "रानी, तुमने मेरी **आँखें खोल दीं**। अभी तक मेरे लिए पैसा ही सब कुछ था, पर आज मेरी समझ में आया कि बुद्धि के आगे पैसा कुछ नहीं है।

–बुंदेलखंड की लोककथा

इन्हें भी जानें

पाठशाला–स्कूल, विद्यालय; **अनाथालय**–अनाथों के रहने का स्थान; **धूर्तों**–दुष्टों; **दाल न गलना**–बात न बनना, उपाय न चलना; **इज़्ज़त**–मान; **जेल की हवा खाना**–जेल की सज़ा भुगतना; **विनती**–प्रार्थना, याचना; **भेद**–रहस्य; **वेश**–रूप; **बुद्धिमत्ता**–होशियारी, अक्लमंदी; **यकीन**–विश्वास; **आँखें खोल दीं**–सच बता दिया।

Scanned by TapScanner